सनातन सत्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सनातन सत्य वह है जो भूत, वर्तमान और भविष्य में कभी भी नहीं बदलता। यह शाश्वत है, यह कुदरत का सत्य है, यह स्थायी है केवल रूपान्तरण होता है। संयोग के साथ वियोग जुड़ा रहता है। किसी भी प्राणी के जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है। यह सनातन सत्य है। यह कुदरत का कानून है। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता–जाता रहता है। उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य निरन्तर चलता रहता है। स्वर्ण एक द्रव्य है इसे अनेक आभूषण बनाये जाते हैं। इसका उत्पाद और व्यय होता रहता है लेकिन मूल रूप से स्वर्ण में कोई परिवर्तन नहीं आता। वह नये–नये रूपों को धारण करता है। संयोग के साथ वियोग जुड़ा रहता है।

सुख पुण्योदय का परिणाम है और दुःख पापोदय का परिणाम है। कोई भी कार्य बिना कारण के नहीं होता। हर घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। वर्तमान जीवन का कारण लिंग शरीर है। पूर्व जन्म का किया हुआ कर्म है। उसी का परिणाम भोगने के लिए वर्तमान जीवन प्राप्त हुआ। किसी भी कार्य के लिए अनेक कारण होते हैं। घड़े के निर्माण में मिट्टी उपादान कारण का कार्य करती है। कुम्भकार निमित्त कारण बनता है तब जाकर के घड़े का निर्माण होता है। यही सनातन सत्य है।

ब्रह्माण्ड के भीतर जड़ चेतन का परिवर्तन होता रहता है। इस सृष्टि में केवल एक ही तत्व ऐसा है जो सनातन सत्य है। वह तत्व है आत्मा। आत्मा के अतिरिक्त जितने भी तत्व है, वे सभी गलन–मिलन धर्मा हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें पुद्गल कहा जाता है। यह जगत् दो तत्वों से मिलकर बना है– जड़तत्व और चेतनतत्व। जड़तत्व वह है जिसमें पूरण और गलन की क्रिया होती है। दर्शन की भाषा में इसे पुद्गल या भौतिक तत्व कहते है। आत्मतत्व वह तत्व है जिसमें हलन–चलन कि क्रिया होती है। ये दोनों तत्व शाश्वत हैं। इनके गुण पृथक्–पृथक् हैं। दोनों को मिश्रण को संसार कहते हैं।

आत्मदर्शन जीवन का सनातन सत्य है। आत्मदर्शन सही दृष्टि सही सोच के माध्यम से लोगों को शिक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। दृष्टि के सही होने पर सब ठीक हो जाता है। इस संसार का वास्तविक सत्य क्या है? इसे हमे जानना है। सबसे निरपेक्ष होकर इस विषय पर चिन्तन करना चाहिए। किसी धर्म, पंथ, मजहब, सम्प्रदाय और अन्य से निरपेक्ष होकर चिन्तन करने से हम उस तत्व तक पहुंच सकते है जो सनातन सत्य है। आत्मा ही सनातन सत्य है। भौतिक सृष्टि पंचभूतात्मक है। यह लोक इसी पंचभूतों से बना हुआ है। पंचतत्वों के मेल से सृष्टि चलती है। भरण–पोषण करने से यह शरीर फलता फूलता रहता है। किन्तु जैसे ही इसके तत्व क्षीण होते हैं वैसे ही यह जीर्ण शीर्ण होकर नष्ट हो जाता है। केवल आत्मा ही शेष रहता है और वही सनातन सत्य है। मैं बोल रहा हूं। कौन बुलवा रहा है? हांथ–पांव चलाने वाले कौन है? वह तत्व आत्मा है। वह शरीर में व्याप्त रहता है। इसीसे शरीर चलता है। शरीर का सनातन सत्य आत्मा है। उसके चले जाने पर शरीर वैसे का वैसा पड़ा रहता है, किन्तु कार्य नहीं करता। संसार में जितने प्रकार के संबंध है, सब स्वार्थ के धागे से जुड़े हुए हैं। स्वार्थ की टकराहट होने पर यथार्थ का ज्ञान होता है।

व्यावहारिक सत्य को इस प्रकार समझा जा सकता है। एक पिता के दो पुत्र हैं। पिता की धन–सम्पत्ति पर दोनों की निगाहें हैं। जब पिता की सम्पत्ति का बंटवारा करना होता हैं तो दोनों एक दूसरे से अधिक प्राप्त करना चाहते हैं। यही से टकराहट शुरू हो जाती है और यह तब तक चलती रहती है, जब तक वह सम्पत्ति नष्ट नहीं हो जाती। जहां टकराहट है वहां विनाश है। इसलिए धन–सम्पत्ति के लिए कभी भी टकराव नहीं पालना चाहिए। धन–सम्पत्ति विनाशी है। अपने पुरुषार्थ से अर्जित धन–सम्पत्ति का ही उपयोग जीवन में करना चाहिए। क्योंकि जिसके भाग्य में जितना लिखा हैं उसको उतना ही मिलेगा उससे अधिक नहीं। दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने से सबकुछ बदल जाता है।

आत्मज्ञान से सही दृष्टि बनेगी। मिथ्या दृष्टि दूर होगी। नकारात्मक दृष्टिकोण परिवर्तित होगा। जब दृष्टि सही रहेगी तो सभी प्राणियों के साथ अच्छा व्यवहार होगा। सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का वास है। चाहे प्राणी छोटा हो या बड़ा, हाथी हो या चींटी सब में एक ही आत्मा निवाश कर रही है। आत्मा के स्तर पर कोई भेद नहीं है। भेद है कार्मण शरीर के

कारण। सही दृष्टिकोण होने पर सनातन सत्य का ज्ञान हो जाता है। हमारे शरीर में जो हमे सुख–दुःख की अनुभूति होती है, वह कौन करता है? जड़ को अनुभूति नहीं होती। क्योंकि उसमें संवेदना नहीं है। वह पुद्गल कहलाता है। वह भी सत्य है किन्तु अनुभूति नहीं करता। अनुभूति आत्मा या चेतन तत्व करता है। अतः आत्मा ही सनातन सत्य है। आत्मा, ज्ञाता और द्रष्टा है। वह अनादि और अनन्त है। न तो उसे देखा जा सकता है न ही स्पर्श किया जा सकता है। हवा न उसे सुखा सकती है और न पानी उसे गिला कर सकता है। गीता में आत्म तत्व की बहुत सुंदर व्याख्या इसी प्रकार की गई है। सनातन सत्य को जानने से जीवन की दशा और दिशा बदल जाती है। नजर बदलने से नजरिया बदल जाता है। उसी एक तत्व के ज्ञान हो जाने पर सबकुछ ज्ञात हो जाता है।